सारिका चंगोईवाला

एफ ई ११०

यारी

सबसे ज्यादा मिठास तेरे गाली में ही है,
तेरे साथ ही तो मैंने ज़ालिम जिंदगी जी है।
मुझे पता है तू मुझे नही छोड़ेगा,
वेसे भी तू मेरे बिना क्या करेगा...
यार, यह अटूट दोस्ती को सलाम है,
तेरे बिना नहीं जी सकता हूं मैं...
तू ही तो सच्चा यार है,
तू ही तो पहला प्यार है...
जिस दिन हमारी बात नहीं हो पाती,
वह दिन साल लगने लगता है।
और जिस दिन हम साथ होते हे,
वह दिन कमाल लगता है।
यार तू तो भगवान बन के आया,
दुख में सम्भाला और खुशी में हँसाया।
जब भी मैने तेरी टांग खीचीं, तूने मुझे दूर हटाया,
मैं तो हूँ निकम्मा, तूने ही तो सच्चा यार होने का धर्म निभाया॥

माँ

माँ की होती है यही पहचान,
बच्चों के साथ है उसका जहान।
करती है अपना पर–पर हमपे कुर्बान,
बच्चों के लिये तो न्यौछावर है उसकी जान॥
डर घड़ी होती है हमारे लिये वह परेशान,
भर न पाएँगे हम कभी, इस मातृत्व का 'एहसास'।
सु:ख की छाया देती हमें, खुद होती परवान,
हमे पाने के लिये वे करती हर कार्य दान।
इसलिए तो है कहते, माँ ही है वह महान,
ईश्वर से है होती, इस जग की जिससे पहचान॥

एक हकीकत

पंकज कपूर
४३७

इसीलिए हिंदी नायाब है छू लो तो चरण
बढ़ा दो तो टांग
धस जाए तो पैर
फिसल जाए तो पांव आगे बढ़ना है तो कदम राह में चिन्ह छोड़े तो पद
प्रभु के हो तो पाद
बाप की हो तो लात गधे की हो तो दुलत्ती
घंघरू बांध दो तो पग
खाने के लिए टंगड़ी
खेलने के लिए लंगडी
पर अंग्रेजी में तो सिर्फ एक Leg ही होता है